उपसंहार

उपसंहार

विष्णु प्रभाकर जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बडा मनोरंजक और चमत्कारिक है। विष्णु जी को बचपन से ही साहित्य कृति का आकर्षण रहा है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में डा.महीपसिंह और डा.राजलक्ष्मी नायडू तथा अन्य लोगोंने बहुत सी जानकारी देने की चेष्टा की है। विष्णुजी का बचपन ढेर सारे किताबों को फाडते हुए बीता। अत: परिणाम स्वरुप उनमें इन किताबों के बारे में रुचि पैदा हो गई जिसका नतिजा बाद में देखने को मिल ही गया। आज वे एक महान साहित्यिक के रूप में ख्यातनाम है। विष्णुजी ने अपने जीवन में जो देखा अनुभव किया उन्हें ही अपनी कलम द्वारा कागज पर लाने का प्रयास जारी रखा है। विष्णुजी पर शुरु में गाँधीजी का काफी मात्रा में प्रभाव रहा है और यह स्वयं विष्णुजी ने भी मान्य किया है। प्रारंभिक रचनाओं में इस प्रभाव का स्पष्ट चित्र देखने को मिलता है। विष्णु प्रभाकर की बाल्य अवस्था में कुछ ऐसी घटनाएँ घटी हैं कि जिससे उनमें हर समय परिवर्तन होता गया। विष्णुजी अपने परिवार की प्रेरणासे एक महान व्यक्ति बने हुए दिखाई देते हैं। सन १९२६ ई.से विष्णुजी ने लिखना आरम्भ किया है। उस समय वे ८वीं कक्षा में पढते थे। लेकिन सही रुपसे उनका लेखन कार्य सन १९३४ ई.के बाद ही देखने को मिलता है। उनकी पहली कहानी `स्नेह` जिसका मूल नाम `स्नेह की ज्वाला` था, लाहौर से प्रकाशित मासिक पत्रिका `अलंकार` के दिसम्बर १९३४ ई.में छपी है। इससे भी पूर्व `दिवाली के दिन` कहानी छद्म नाम से १९३१ ई.में लाहौर के ही हिन्दी `मिलाप` में छप चुकी थी। तब से अब तक वे कहानियाँ,नाटक,उपन्यास,जीवनियाँ,यात्रा वृत्त,बाल-साहित्य ,कथा साहित्य,एकांकी आदि साहित्य निरंतर लिखते आ रहे हैं।

विष्णु प्रभाकर जी ने युगीन संस्कृति और समस्याओं पर अबाध गति से कलम चलाई है। वे बहुमुखी प्रतिभा के सजग लेखक हैं। विष्णुजी ने जीवन के विविध आयामों को उद्घाटित किया है। आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों में प्रेमचन्द जी के बाद विष्णु प्रभाकरजी का स्थान शीर्षस्थ है। वे एक मात्र ऐसे साहित्यकार है,

जो वर्ग,धर्म,जाति,वाद आदि से मुक्त रहकर शासकीय तथा अशासकीय सभी प्रकार की कृपाओं से स्वयं को बचाते हुए मानव और मानवता के लिए माँ सरस्वती की आराधना कर रहे हैं। सरल निष्कपट और मृदुभाव के प्रभाकर जी का जीवन पूर्णत: साहित्य साधना को समर्पित है। प्रभाकर जी का रहन-सहन बिल्कुल सीधा-सादा है। खादी को उन्होंने अपने जीवन में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। वे चेहरे-मोहरे से नेता अधिक लगते हैं साहित्यकार कम। विष्णु प्रभाकर जी का स्वभाव विनम्र,निश्छल,सहृदय,मृदु कोमल,सहज और सरल है। विशेष बात उनकी यह है कि मसिजीवी लेखक होकर भी साहित्य जगत में उन्होंने अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। विष्णु प्रभाकरजी का व्यक्तित्व आधुनिक हिन्दी जगत में श्रेष्ठ है। वे एक महान साहित्यकार हैं। साहित्य के क्षेत्र में आने से उन्होंने सरकारी नौकरी का इस्तीफा दिया और केवल कलम के सहारे दिल्ली जैसे महान शहर में अपनी जीविका चलाना आरम्भ किया और वह कार्य आज भी जारी है।

विष्णु प्रभाकर जी ने अनेक विधाओं का निर्माण किया है और कर रहे हैं लेकिन सबसे अधिक मात्रा में उनका कहानी साहित्य ही देखने को मिलता है। इस शोध प्रबन्ध के अन्तर्गत सिर्फ चार कहानी संग्रहों पर विचार किया गया है। इन चार कहानी संग्रहों के अन्तर्गत कुल मिलाकर बयालीस कहानियाँ हैं। परंतु एक कहानी दो संग्रहों के अन्तर्गत होने के कारण कुल संख्या अड़तालीस है। इन अड़तालीस कहानियों का सामान्य परिचय द्वितीय अध्याय में दिया है। विष्णु प्रभाकर जी की कहानियों में विविध पात्रों को स्थान देकर महान कहानी बनाने की चेष्टा की है। उनकी कहानियों में सामाजिक आदर्शवाद का काफी मात्रा में चित्रण मिलता है। विष्णुजी स्वयं भी कुछ कहानियों के पात्र रहे हैं। उन्होंने जो भी कहानियाँ निर्माण की हैं उनमें सचाई और वास्तविकता का दर्शन मिलता है। विष्णुजी ने अपनी कहानियों में जाति,धर्म आदि को स्थान नहीं दिया। वे गांधीवादी होकर भी उनमें काल के अनुसार परिवर्तन दिखाई देता है। परिवर्तन यह सृष्टि का नियम है और इस नियम के अनुसार विष्णु प्रभाकरजी ने भी अपने साहित्य में परिवर्तन लाया है। उन्होंने हर एक विषय को अपने साहित्य में स्थान दिया है। उनकी सबसे अधिक लोकप्रिय और प्रसिध्द कहानी है धरती अब भी

घूम रही है । इस कहानी के जैसी उनकी अनेक कहानियाँ हैं। उनकी बहुत-सी कहानियों पर पुरस्कार सम्मान भी मिला है ।

विष्णु प्रभाकर जी की कहानियों में चित्रित विविध समस्याओं का अध्ययन इस शोध-प्रबन्ध के तृतीय अध्याय में किया गया है । विष्णुजी ने कहानियों में विविध समस्याओं को स्थान दिया है । सामाजिक,आर्थिक,पारिवारिक और अन्य समस्याओं का दर्शन इन अड़तालीस कहानियों में हुआ हैं । सामाजिक समस्याओं के अन्तर्गत मानव मानव के संबंध,जाति,धर्म,वंश के आधार पर निर्माण होने वाले संघर्ष तथा अवस्थाओं के आधार पर निर्माण होने वाले संघर्ष आदि का विवेचन सामाजिक समस्या के अन्तर्गत किया है । समाज के साथ मानव का दृढ नाता है । उस नाते को वह तोड़कर जी ही नहीं सकता । मनुष्य को समाज के सहारे ही जीना पड़ता है । सामाजिक बन्धनों को उन्हें पालना ही पड़ता है । पुरानी पीढी और नई पीढी के बीच हर समय संघर्ष होता है । इस संघर्ष के कारण अनेक सामाजिक समस्याएँ निर्माण होती है । ऐसी विविध समस्याओं को विष्णु प्रभाकर जी ने अपनी कहानियों में स्थान दिया हैं । आर्थिक समस्याओं के कारण मानव की प्रगति में बाधा निर्माण होती है । मानव की आर्थिक स्थिति अगर ठीक होगी तो वह सही राह पर चलेगा । आर्थिक परिस्थिति के कारण उनको अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है । मनुष्य के पास धन-सम्पति न होगी तब वह भ्रष्टाचार के मार्ग को अपनाता है । उसमें उस व्यक्ति का कोई दोष नहीं होता क्योंकि उसे उसकी परिस्थिति मजबूर करती है और वह अपना सही रास्ता छोड़कर गलत रास्ते से चलता है । आधुनिक युग में भी देखने को मिलता है कि जिनके पास बहुत सी सम्पत्ति है वे दूसरों को हीन समजते हैं और अपने आपको श्रेष्ठ साबित करते हैं । आर्थिक समस्याओं के साथ ही पारिवारिक समस्या भी महत्वपूर्ण है । जिनके अन्तर्गत परिवार से जुडी हुई समस्याओं का चित्रण मिलता है । परिवार में पति-पत्नी,माँ-बच्चे,भाई-बहन, सास-बहू, आदि का समावेश होता है । परिवार में वैवाहिक संबंध और विवाह बाह्य संबंधों के साथ ही स्वार्थ के लिए संघर्ष दिखाई देता है । स्वार्थ के कारण मनुष्य अपने परिवार के लोगों की जान तक लेता है । आधुनिक युग में मनुष्य की कीमत पैसे में होने लगी है । पैसा आज शिष्टाचार का प्रतीक माना जा रहा है ।

पैसे को हासिल करने के लिए लोग कोई भी मार्ग अपनाते हैं ।

पारिवारिक समस्याओं के साथही अन्य समस्याएँ जुडि हुई होती है । परिवार में विभिन्न विचारों के लोगों का समावेश मिलता है । ऐसे अनेक लोगों का समूह ही परिवार कहलाता है ।

अन्य समस्याओं के अन्तर्गत राजनीतिक समस्या ,भ्रष्टाचार की समस्या, सौन्दर्य लालसा की समस्या आदि विविध समस्याएँ विष्णु प्रभाकर जी की कहानियों में देखने को मिलती हैं । राजनीति में जो भ्रष्टाचार चलता है वही अन्य जगह से बहुत अधिक मात्रा में दिखाई देता है । एक कहानी में विष्णुजी ने कहा है कि काले धन से सत्ता प्राप्त की जाती है और सत्ता से कालाधन । सही और मार्मिक शब्दों में विष्णु प्रभाकर जी ने राजनीतिक स्थिति का वर्णन किया है । राजनीति में आमतौर पर लोग भ्रष्टाचारी ही होते हैं । आधुनिक युग में भ्रष्टाचार करनेवाला समाज की नजरों में श्रेष्ठ ठहरता है और जिन्हें भ्रष्टाचार करने के लिए मजबूर किया जाता है वह समाज की दृष्टि से चोर साबित होता है । आज की कानून व्यवस्था भी जीर्ण हुई दिखाई देती है ।चोर को छोडकर सन्यासी को फाँसी दी जाती है यह आधुनिकता का परिणाम है । असल में सभी लोग चोर ही हैं । मगर चोरी करने के जो तरीके हैं वे अलग अलग है । कुछ लोग जरूरत के लिए चोरी करते हैं तो कुछ जरूरत न होने पर भी चोरी करते हैं । जरूरत न होने वाले ही आज बहुतसे चोर दिखाई देते हैं ।भ्रष्टाचार तो कुछ आदमी के खून की हर बूँद में दिखाई देता है । भ्रष्टाचार न करनेवाले बहुत से गिने-चुने ही लोग मिलेंगे । लेकिन उनको भी भ्रष्टाचारी बनाने का कार्य किया जाता है । एक कहानी में बताया है कि रेल विभाग में किस तरह भ्रष्टाचार चलता है यह बताने वाले को ही निलंबित किया जाता है ।

मनुष्य सौन्दर्य लालसा पर मोहित होता है । परंतु सौन्दर्य तो क्षणिक सुख है । उस सुख को प्राप्त करने के लिए वह कोई भी घटिया काम करता है । सौन्दर्य लालसा मनुष्य को लगा हुआ कलंक है । हर व्यक्ति सौन्दर्य को चाहता है

लेकिन एक का सौन्दर्य नष्ट हो जाने पर दूसरे सौन्दर्य की ओर आकर्षित होता है। यह मनुष्य का बुरा आचरण है। लेकिन आज इसी का अमल सभी ओर दिखाई देता है। सौन्दर्य के कारण जो संघर्ष निर्माण होता है उसका परिणाम कुछ और ही होता है जिसके कारण मनुष्य का जीवन नष्ट होता है इसका उदाहरण विष्णुजी ने एक और कुन्ती ' इस कहानी में दिया है। इस कहानी के साथ अनेक ऐसे उदाहरण अन्य कहानियों में भी मिलते हैं।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत विष्णु प्रभाकर जी की कहानियों की विशेषताएँ जो देखने को मिलती है उनका विवेचन किया है। विष्णु जी ने अपनी रचनाओं में अनेक नये और पुराने विषयों को स्थान देकर अपनी कृति को महान बनानेका कार्य किया है और आज भी वे कर रहे हैं। विष्णु जी की कहानियों में अनेक विशेषताएँ मिलती हैं। उनमें झूठ एवं पाखण्ड, सहज संवेदना, घृणा, लोक कल्याण, सामाजिक आदर्श, यथार्थ का चित्रण, अंध:विश्वास एवं रुढि परम्परा और आधुनिकता आदि विशेषताओं का दर्शन विष्णुजी की अनेक कहानियों में मिलता है। विष्णु प्रभाकर जी ने अपने कहानी साहित्य में नये-नये विषयों को आधुनिकता और वास्तविकता के साथ लाने की चेष्टा की है। पुरानी पीढी के लेखक विष्णु प्रभाकर नये पीढी के जैसे लगते हैं। विष्णु जी ने अनेक महान साहित्यिकों का अध्ययन और परिचय भी कराया है और इन सभी का दर्शन उनकी रचनाओं में होता है। विष्णुजी एक महान और श्रेष्ठ प्रति के साहित्यकार के रूप में आज ज्ञात हैं।